प्रेमचन्द की कहानी पूस की रात में अभिव्यक्त आधूनिकताबोध

NEETHU M

ASSISTANT PROFESSOR

SADANAM KUMARAN COLLEGE PATHIRIPALA

Abstract

आधुनिकताबोध आज की सामाजिक और सांस्कृतिक मूल में निहित एक दृष्टि हैं।यह यथार्थ बोध हैं। आधुनिकता यथार्थ का वह संवेदनशील साक्षात्कार है जो मानव मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा से आर्जित होता हैं। मूल्यों के प्रति यह निष्ठा मानव चेतना के साथ सदैव संयूक्त रही हैं। स्वतंत्रता के बाद लोगों के मन में एक ऐसी भयभीत सपना उत्पन्न हूआ ये भय ही आधूनिकता क्षेत्र में साहित्य के रुप में प्रकट होता हैं।। आधुनिकता बोध को कोई रुप नहीं हैं। यह लेखकों की दृष्टि का परिणाम हैं। आधुनिकता पाठकों के मन में बदलती हूई नवीन की खोज हैं। मैं यहां प्रेमचन्द की कहानी पूस की रात में अभिव्यक्त आधूनिकताबोध के बारे में आपना मत व्यक्त करती हैं। यह प्राचीन और पारिवारिक संबंधों और नए विचारों की स्थापना हुई बदलाव के क्रम में आदमी मिथक से हटाकर यथार्थ के धरातल पर खड़ा हुआ है।

Key words

आधुनिकताबोध , आत्मालाप, सामाजिक, पारिवारिक संबंध

भूमिका

इतिहास में सबकुछ यथार्थ हैं। उसी प्रकार कहानी में भी काल्पनिक होते हुए भी यथार्थ और नवीनता को महत्व दिया गया हैं। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध रचयिता मूर्शी प्रेमचन्द ने पहली बार हिंदी साहित्य में यथार्थ की शुरुआत की उन्होंने आम आदमी को पहली बार अपनी रचनाओं का विषय बनाया और उसके समस्याओं पर खूलकर कलम चलाते हुए उसे साहित्य में नायक के पद पर आसीन किय। लोग अपने जिंदगी में अनुभव करने वाले अनेक यादनाओं की चित्रण प्रेमचन्द अपनी रचनाओं में प्रकट किया हैं।यह आधुनिक लोगों को एक ऐसी बोध फैलाने वाले हैं। ये बोध मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और चिंतन ने निर्णय नवीन से नवीन की खोज की। मानव के बदलाव के क्रम में आदमी मिथक से हटाकर यथार्थ के धरातल पर खड़ा हुआ है।

पूस की रात में एक ऐसी आधूनिकता बोध को प्रकट किया हैं । हमारे समाज में उन्नीसवीं शताब्दी से ही जो मूलभूत परिवर्तन होने का आरंभ हुआ था। वह प्रेमचन्द के दिनों में तक आते-आते पूंजीवादी व्यवस्था का सम्मान के साथ कोई संबंध नहीं हो जाता हैं। कहानी के केन्द्र पात्र हलकु ने मजदूरी करके जाड़े से बचने के लिए एक कंबल खरीदने के लिए तीन हजार रुपए बचाया था। साहूकार अपने करते वसूल करने आया और हलकु ये तीन हजार रुपए उसे देना चाहता हैं तो उसके पत्नी मून्नी अनाकामी करती हैं किसान विशेष रूप से

छोटे किसानों की तबाही की दस्तान इनमें हैं। किसान कर्जदार है उसने मज़दूरी करके तीन हजार रुपए कमाए हैं ताकि कंबल खरीदा जा सके , जिसमें पुस की रात में खत की रखवाली कर सकते ते इन रुपए को महाजन ले लिया। । वो किसान को मज़दूर बनाना चाहते हैं । हलकु अपने जिंदगी किसी भी तरह जीना चाहते हैं। हलकु किसान से मज़दूर बनाना चाहते हैं अपने ये जो जिंदगी में पुंजीवादी व्यवस्था से उन्हें सबकूछ सहना पड़ता है। पूंजीवादी व्यवस्था मनुष्य को एक जानवर के रूप में बदलाने की जो व्यवस्था कहानी के अंतर्गत देख सकता है, हलकु ने अपने खेत नाश होने पर भी प्रसन्न होता हैं।

पूस की रात के जाड़े का खेत की रखवाली करते समय मूकाबले करते हुए हलकु ने अनुभव किया कि यह खेती का मजा है... मज़दूरी हम करें मजा दूसरे लूटे। जब जाड़े की कारण हलकू को किसी प्रकार नींद नहीं आई तो उसने अपने खेत तक से कुछ दूर में जाकर पत्ते इकट्ठा कर के आग जलाई और उसकी भाग में सो गया थ। नीलगायों का झूड खेत चलते रहा कुत्ता भौंकते रहते हैं और हलकु खेत के चले जाने का आभास पाकर भी खेत पर नहीं गया। क्योंकि भयानक जाड़े के कारण उन्हें उठकर वहां तक जा नही सकत।वो अपने ऐसी अवस्था से बहुत पीड़ित हैं , सुबह मून्नी ने आकर उसे उठाया। खेत पूरी चरा जा चुका था। खेत की दशा देखकर मून्नी के मुंह पर उदासी छाई थी ,पर हलकू प्रसन्न था। क्योंकि अब रात को ठंडा में यहां सोना तो नहीं पड़ेगा। वो अपने ये अवस्था से और अपनी यह खेती से अलग हो कर जीना चाहते हैं। जिंदगी भर मेहनत किया तो भी वो तभी गरीबी को सामना करना पड़ता हैं। दिन , रात मेहनत करके उन्हें कोई पैसा नहीं मिलता है। पैसा मिले तो ये साहुकार को देना पड़ता हैं। हलकु ने किसान से मज़दूर बनाने का विवश हो गया है। वैसे भी पूंजीवादी व्यवस्था में खेती का सम्मान के साथ कोई संबंध नहीं रह जाता हैं। दूसरे उद्योगों का शोषण पर आधारित समाज में किसान अपने श्रम के साथ परायेपन का अनुभव करता है और श्रम पर उसकी आस्था उठ जाती हैं।

पूस की रात में होने वाले जाड़े के कारण अपने जबरा को अपनी गोद में सूला लेता है , कूत्ते की देह से किसी दूर्गध आ रही है फिर भी वो अपने गोद में चिमटाए हूए ऐसे सूख का अनुभव कर रहे हैं जो इधर महीनों से उसे न मिला था जबरा शरद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है, और हलकु की पवित्र आत्मा में तो उस कूत्ते के प्रति ध्रण की गन्ध तक न थी । अपने किसी अभिनंदन मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब दर्शाया खोल दिया था, और उसका एक-एक अणू प्रकाश से चमक हां था कूत्ते के साथ हलकू का यह बंधुत्व उसकी पवित्र आत्मा का परिणाम हैं यहां भी स्मरण कर लेना चाहिए कि जिस समय प्रेमचन्द यथार्थ के उपकरण ध्रुवांत पर पहुंच रहे थे । उसी समय उगृ का आविर्भाव हुआ था।यह आकर्षण नहीं था। इसके पीछे इतिहास का तर्क था, उसी तर्कसम्मत परिणति थी अस्तु भाग की और जाते हूए हलकु ने उससे कहा अब नहीं रह सकता जबरा चलो वहां से पत्तियां बटोरकर तापें,टांक हो जाएगा तो फिर आकर सोएगा । अभी तो रात बहुत है , जबरा कूं...कूं करके अपनी सहमति प्रकट करता है, रात के ठंडे की कारण रात बहुत ज्यादा लग रहा है। जैसे कि वही वो अनुभव करता हैं। इसलिए रात बहुत लंबी होने से नज़र आता है,पूस के जाड़े में खेतिहर मजदूर की हालत और आकंठ डूबे करते के तगोद का वर्णन बड़े बारिक। एवं मार्मिक ढंग से प्रेमचन्द ने किया है। खेती करने पर भी दो जून की रोटी नहीं मिल पाती हैं । उसमें भी बाकी के बोझ से हलकु की पत्नी मून्नी कहती हैं रूम कर्मों नहीं खेती छोड़ देते मर मर कर काम करो ,उपज होते बाकी चूकाने के लिए तो हमारा जन्म ही हुआ है।

पेट के लिए मंजूरी करो ऐसे खेती से बाज आए । इस कथन में केवल मून्नी का ही नहीं बल्कि पुरे खेतिहर मजदूरों का दर्द सूनाई पड़ता हैं। तगादे का वर्णन प्रेमचन्द इस प्रकार करते हैं हलकू ने आकर पत्नि से कहा लाओ जो रुपए रखा है उसे दें दूं , किसी तरह गल्ला तो छूटे पीछे फिर कर बोली तीन ही तो रुपए है ,दे देखो तो कंबल कहां से आवेग पूस की रात में घर में कैसे काटेगी उससे कह दो फसल पर रुपए दे देंगे । अभि नहीं जब अनर्थ में हलकू का खेत भी नष्ट जाता है तो यह सोचकर खुश हो जाता है कि चलते रात की ठंड में यहां सोना तो नहीं पड़ेगा। जब मून्नी कहती है कि अब मजदूरी करके मालगूज़ारी भरनी पड़ेगी तो रोंगटे कांप जाते है। हलकू अपनी यही अवस्था से बदलाने चाहते हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं से अपनी रचनाओं में प्रयुक्त आधुनिकता बोध को प्रकट करना चाहते हैं। किसान अपनी मोहभंग की अवस्था में किसी भी प्रकार जीना चाहते हैं, तभी अपनी किसान से मज़दूर बनना विवश करता हैं।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध रचयिता मूर्शी प्रेमचन्द जी ने पूस की रात रचना द्वारा आज के लोगों के मन में एक ऐसे मानवीय और अमानवीय संवेदना की न सिर्फ पहचान कराती हैं । वहीं समाज की किसानों की जिंदगी के चित्रण करने के साथ- साथ मानव मन की बदलाव की नज़र भी डालते हैं। सहन करके हमारी यह जिंदगी बदलाने की कोशिश भी यहां देख सकता है यह कहानी में एक मनुष्य और उसकी परिस्थितियों से असंवेदनशील सहना है तो दूसरी ओर हलकू की जबरा के प्रति संवेदनशीलता है, आधुनिक दूनिया में पूस की रात जैसे रचनाओं एक ऐसी संदेश और बोध को फैलाता हैं।

संदर्भ सूची

- प्रेमचन्द की कहानियां – प्रेमचन्द
- पूस की रात' : हल्कू अभी जिन्दा है। - प्रमोद कुमार यादव
- पूस की रात (हल्कू के बहाने भारतीय किसानों पर एक नज़र) – बी. डी. मानिकपुरी